विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली

(University Grants Commission, New Delhi)

लघुशोध परियोजना

(Minor Research Project)

अंतिम अहवाल

(Final Report)

"जनसंचार माध्यमों में रोजगार अर्जन के अवसरों का मूल्यांकन"

(हिंदी भाषा के अध्ययन के विशेष संदर्भ में)

Submitted to

University Grants Commission

Western Regional Office,

Ganeshkhind, Pune -411007

शोधकर्ता

श्री.रमेश सोपान मोटे

सहाय्यक प्राध्यापक,

हिंदी विभाग,

पद्मभूषण डॉ. वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, तासगाव,

ता. तासगाव, जि. सांगली.

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करता हूं कि, **“जनसंचार माध्यमों में रोजगार अर्जन के अवसरों का मूल्यांकन”(हिंदी भाषा के अध्ययन के विशेष संदर्भ में)** मेरा मौलिक शोध कार्य है, जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली को प्रस्तुत कर रहा हूं। मैने यह शोध कार्य पुरे लगनसे क्रिया है। जो तथ्य लघुशोध परियोजना मैं प्रस्तुत किए गए है और सर्वथा मेरे अध्ययन, अनुसंधान एवं चितंन की उपज है। यह योध कार्य इससे पहले किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोध कर्ता

श्री. रमेश सोपान मोटे

स्थानः सांगली

तिथिः   /   /2022

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लोगों शोध परियोजना की पूर्ति में जिन विद्वतजनों तथा आत्मीयजनों मेरी सहायता की है उन सब के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य मानता हूं।

प्रस्तुत संशोधन कार्य करने के लिए हमारी संस्था श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था के नामदार चंद्रकांतदादा पाटिल (अध्यक्ष), प्रधानाचार्य अभयकुमार साळुखे (कार्याध्यक्ष), प्रधानाचार्य सौ .शुभांगी ताई गावडे (सचिव), प्रधानाचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ (सहसचिव प्रशासन), प्रधानाचार्य गवळी (सहसचिव अर्थ) मार्गदर्शन किया उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूं।

आदरणीय प्रधानाचार्य डॉ. मिलिंद हुजरे (पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, तासगाव) अपनी व्यस्तताओं के बावजूद मुझे मौलिक मार्गदर्शन किया। आपके चिंतनशील, अध्ययनशील, निर्देशन से मुझे जो दिशा दृष्टि मिली है उसके लिए मैं आपका हार्दिक कृतज्ञ हूं।

शोध कार्य के लिए निरंतर सहयोग एवं प्रेरणा देने वाले मेरे विभाग के प्रमुख प्रा. आर. व्ही. मानकर, प्रा. जे. ए. यादव, डॉ. अमोल सोनवले, प्रा

अनिता पाटील, डॉ. बंडू कदम ,श्री. एम. बी .कदम, श्री. एम. के. पाटिल, ग्रंथपाल महाडिक मॅडम इनका भी आभार प्रकट करना मैं अपना दायित्व समझता हूं।

जिनका इस कार्य को संपन्न बनाने में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ उन सभी मित्रों शुभचिंतकों एवं सहयोग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं ।

स्थानः सांगली श्री. रमेश सोपान मोटे

तिथिः / /2022 शोध कर्ता

“जनसंचार माध्यमों में रोजगार अर्जन के अवसरों का मूल्यांकन” (हिंदी भाषा के अध्ययन के विशेष संदर्भ में)

जनसंचार आज जन-जीवन से इतने व्यापक तौर पर जुड़ चुका है कि किसी भी राष्ट्र के विकास में उसकी भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण हो गई है। विष्व के अनेकदेशों में आज रेडियो, टेलीविजन आरै सिनेमा जैसे माध्यमों का उपयोग षिक्षा के गुणात्मक सुधारने के लिए किया जा रहा है। जनसंचार विषेशज्ञां के वर्ग का ऐसा मानना है कि जनसंचार माध्यम हमारे भीतर काल्पनिक सोच पैदा करते हैं जिससे विषय के प्रति रुचि पैदा होती है। हमें कुछ औरनया सीखने की प्रेरणा मिलती है।

समाचार-पत्रों, रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रमों में विशिष्ट और योग्य व्यक्तियों के विचार शामिल होते हैं जिसका प्रसार आम व्यक्ति तक पहुँचता है। टेलीविजन और फिल्मों के कारण बच्चों और युवाओं में में फैशन,चकाचैंध आरै प्रसिद्धि की चाह भी बढ़ती है। नौकरी और व्यवसाय के बारे बच्चों और युवाओं में भी रेडियो, टेलीविजन तथा समाचार-पत्र और सूचनाएँ प्रसारित-प्रकाशित करते रहते हैं जिससे युवावर्ग या व्यापारी वर्ग को काफी मदद मिलती है। रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन, सूचना और खबरों के साथ जनसंचार माध्यमों के द्वारा लोगों का मनोरंजन भी होता है। विज्ञापन द्वारा रेडियो में राष्ट्रीय एकता तथा बचत की भावना पैदा की जा सकती है। इसके माध्यम से लोगों में जागृति भी पैदा होती है। जनसंचार माध्यम के द्वारा स्वास्थ्य, परिवार कल्याण,टीकाकरण, सन्तुलित आहार तथा कृषि आदि से सम्बन्धित जानकारियाँ दी जाती हैं। यह समाज सुधार का कार्य भी करता है। नशाबंदी, परिवार नियोजन, दहेज प्रथा आदि विषयों पर कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को जाग्रत किया जाता है। जिससे समाज सुधार हो सके। प्रकृति प्रकोप से उत्पन्न त्रासदी के समय जनसचंार माध्यम प्रभावी भूमिका का निर्वाह करते हैं। बाढ़, अकाल, भूकम्प या युद्ध से सम्बन्धित कार्यक्रमों के प्रसारण द्वारा लोंगो में सहानुभूति एवं सहायता का भाव जाग्रत करने काप्रयास किया जाता है।सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जनसंचार माध्यम आज जनता के इतने करीब आ चुका है कि विश्व के किसी कोने में बैठा हुआ आदमी मिनटों में पूरी दुनिया की खबरों से

वाकिफ हो जाता है। जनसंचार ने पूरे विश्व को भूमण्डलीकृत कर दिया है। जनसंचार की दृष्टि से 21वीं शती विषेश रूप से महत्वपूर्ण हैं। इसमें नित नए-नए आविश्कार और अनुसंधान हो रहे हैं। संचार-व्यवस्था में हो रहे परिवर्तन एवं विकास की तीव्रता के कारण अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं तथा उनमें विकास की और भी सम्भावनाएँ बढ़ी हैं। आज संसार में कई विकसित देषों में अन्तरिक्ष में उपग्रह छोड़ने की होड़ मची है। इसमें विकासशील देश भी पीछे नहीं हैं। इस दृश्टि से भारत का भी एक सन्तोशजनक प्रगतिपूर्ण प्रयास कहा जा सकता है। लगभग सौ से अधिक देषों में इन्हीं संचार उपग्रहों द्वारा टेलीविजन सन्देष भेजे और प्राप्त किए जाते हैं। इनमें हजारों टेलीफोन चैनल हैं जिन पर अलग-अलग सन्देष भेजे जाते हैं। इनमें बहुत से रेडियो और टेलीविजन चैनल भी हैं। संचार उपग्रहों के कार्यक्रमों में अब तक सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम इंटलसेट संचार उपग्रहों का रहा है। ये व्यापारिक उपग्रह हैं जिनके 109 राष्ट्र सदस्य हैं और इन उपग्रहों द्वारा समस्त विश्व में लगभग 500 से अधिक केन्द्र एक-दूसरे से जुड़े हैं। कृत्रिमसंचार उपग्रह की सहायता से टेलीफोन, रेडियो और टेलीविजन सन्देषों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजना बिल्कुल ही आसान हो गया है। उपग्रहों की मदद से केबल टी.वी का लाभ भी मिल रहा है। वर्तमान में विश्व में ऐसे संचार उपग्रहों का निर्माण भी हो रहा है जिनमें सैकड़ों टेलीविजन चैनल आरै लोगों टेलीफाने चैनल हैं गे। इस समय विश्व के कई देषो में टेलीविजन के अतिरिक्त चैनलों पर शैक्षिक कार्यक्रम का प्रसारण हो रहा है। भारत में दूरदर्शन पर जो शैक्षिक कार्यक्रम आज प्रसारित किए जा रहे हैं। उपग्रह की सहायता से निकट भविष्य में उन्हें भी टेलीविजन के अतिरिक्त चैनल पर प्रसारित करने की सम्भावनाएँ हैं। कुल मिलाकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निकट भविश्य में जनसंचार के विकास का मार्ग निरन्तर गतिषील होगा और इसके विभिन्न आयामों में अनेक सम्भावनाएँ विकसित होंगी।

लघु शोध परियोजना

"जनसंचार माध्यमों में रोजगार अर्जन के अवसरों का मूल्यांकन (हिंदी भाषा के अध्ययन के विशेष संदर्भ में)"

प्रकल्पना

स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद देश का संविधान बनाना और उसमें हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाना हिंदी के अध्ययन को बढ़ावा देने वाली घटनाएं है। आज देश भर के अनेक विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्ययन अध्यापन की सुविधाएं है और हजारों नहीं बल्कि लाखों की संख्या में छात्र हिंदी में बी ए और एम.ए. की उपाधियां पा रहे हैं। एमफिल पीएचडी भी कर रहे हैं। लेकिन कड़वा सच है कि रोजगार अर्जुन में अधिकतर छात्र असफल हो रहे हैं। हिंदी अद्वैता के लिए केवल B.Ed, M.Ed या नेट,सेट उत्तीर्ण होकर कहीं पर अध्यापक प्राध्यापक बन्ना इतना सीमित क्षेत्र ही माना गया है। लेकिन इन्हें गिनी छात्रों का अपवाद छोड़ दें तो अधिकांश छात्र बेकरी का शिकार हो जाते हैं। इस परियोजना के जरिए ऐसा तथ्य खोजना है कि हिंदी के अध्ययन के लिए रोजगार के अवसर अनंत है परंतु उस पर गंभीरता से अध्ययन अन्वेषण नहीं हुआ। यह परियोजना इस अभाव की पूर्ति का प्रयास है।

परियोजना का उद्देश्य

हिंदी तथा हिंदी तर भाषी प्रदेशों में हिंदी अध्ययन की संख्या बहुत बड़ी है किंतु केवल शिक्षा क्षेत्र में ही व रोजगार के अवसर खोजते हैं जिनमें अधिकांश को निराश होना पड़ता है। दूसरी और वर्तमान काल में जनसंचार माध्यमों में भाषा के अध्ययन को रोजगार के सर्वाधिक अवसर उपलब्ध है। हां यह सच है कि मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक निवेदक उद्घोषक संवाददाता समाचार लेखक संपादक सह संपादक निर्माता साक्षात्कार करता कार्यक्रमधिकारी अनुवादक विज्ञापनदाता आदि की आवश्यकता है पर हिंदी पाठ्यक्रमों में इनका समावेश न होने के कारण वर्तमान छात्र वहां पहुंच नहीं सकते। इस परियोजना के जरिए संचार माध्यमों में हिंदी अध्ययन के लिए जिन विभिन्न पदों पर सेवा करने के अवसर उपलब्ध है उनकी विस्तार से चर्चा करनी है। साथ ही संचार माध्यमों में रोजगार पाने योग्य क्षमता अर्जित करने के विविध बिंदुओं पर प्रकाश डालना है। सर यह है कि यह परियोजना

हिंदी देता के लिए संचार माध्यमों में स्थित सेवा के अवसर सूचित करने में तथा उन्हें का बिल बनाने में निश्चय ही मदद सिद्ध होगी। रोजगार उन्मुख हिंदी का मूल्यांकन इस परियोजना का प्रधान प्रयोजन मानना होगा।

शोध-प्रविधि

प्रत्येक कार्य एवं विषय की स्वतंत्र मांग होती है। इस शोध को मूलतः सर्वेक्षण अनुसंधान कहा जा सकता है। इसके लिए विभिन्न विधियों का उपयोग किया गया है।

शोध पद्धतियाँ

1. आगमनात्मक 2. पर्यवेक्षात्मक 3. ऐतिहासिक 4. तुलनात्मक 5. मनोवैज्ञानिक

प्रस्तुत षोध द्वितीय स्रोत पर अध्ययन किया गया है।

शोध सामग्री स्रोत

“जनसंचार माध्यमों में रोजगार अर्जन के अवसरों का मूल्यांकन (हिंदी भाषा के अध्ययन के विशेष संदर्भ में)” इसके सभी पक्षों का गहराई से विष्लेषण किया गया है। इसी के साथ हिन्दी के बारे में मीडिया के विद्यार्थी, प्रोफेसर्स और मीडियाकर्मीयों की क्या अवधारणा हैं।

द्वितीय स्रोत

“जनसंचार माध्यमों में रोजगार अर्जन के अवसरों का मूल्यांकन (हिंदी भाषा के अध्ययन के विशेष संदर्भ में)” की वर्तमान स्थिती के आकलन के लिए हिन्दी के विभिन्न रिचर्स जर्नल एवं साहित्य का अध्ययन किया गया है।

तथ्य संकलन

"जनसंचार माध्यमों में रोजगार अर्जन के अवसरों का मूल्यांकन (हिंदी भाषा के अध्ययन के विशेष संदर्भ में)" की अवधारणा हेतु उनकी जानकारी इस संबंध में आवष्यक साहित्य का अध्ययन किया गया है। हिन्दी में रोजगार अर्जन के अवसरों और माध्यमों की भूमिका के लिए तथ्यों का सटीक अध्ययन किया गया है।

साहित्य समिक्षा

किसी भी विषय पर जब शोध कार्य किया जाता है तो उस विषय की विषय वस्तु के साथ उस विषय पर भूतकाल में कितना कार्य किया जा चुका है ये देखा जाता है और हमारा शोध कार्य वर्तमान में समाज को हमारी विषय वस्तु से क्या मार्गदर्शन मिल सकता है से शुरू होती है पूर्व साहित्य समीक्षा ताकि शोध कार्य में उन्नत अनुसंधान हो और शोध संपूर्णता के साथ पूर्ण हो और निष्कर्ष समाज और शिक्षा जगत को भविष्य में नई और सही दिशा दे सके।

जैसा कि विदित है कि विषय ''जनसंचार माध्यमों में हिन्दी की दशा और दिशा'' की बात की गई है। ऐसे में न्यू मीडिया के समस्त साधनों को समाहित कर अनुसंधान का कार्य किया गया है।

जनसंचार के माध्यमों में समाचार पत्र, रेडियो, टेलिविजन, सोशल मीडिया और परंपरागत मीडिया से जुड़ी विभिन्न विषय वस्तु की उपलब्ध अधिकतम पुस्तकों का अध्ययन किया है ताकि शोध कार्य को सही दिशा मिल सके।

हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास के लिए सुधीर पचैरी की पुस्तक उलट आधुनिक परिदृश्य का अध्ययन किया गया है।

हिन्दी पत्रकारिता का विकास एवं विविध आयाम सुश्री सुशीला जैन की पुस्तक में हिन्दी पत्रकारिता का विकास एवं आयाम की विस्तृत व्याख्या की गई है।

विभिन्न रिसर्च जर्नल के अध्ययन ने भी शोध कार्य को आगे बढ़ाने में मदद की है। बालकृष्ण भट्ट की पुस्तक ''हिन्दी की दशा और पत्रकारिता'' भी शोध कार्य में सहायक सिद्ध हुई।

विभिन्न पुस्तकें जैसे:- बी. एस. ठाकुर की "हिन्दी समाचार पत्रों के संपादक" एवं कैलाश नारद की मध्य में हिन्दी पत्रकारिता ने भूतकाल और वर्तमान परिदृश्य में पत्रकारिता में आए तुलनात्मक अध्ययन को स्पष्ट किया है।

तरूशिखा सुरंजन की "हिन्दी पत्रकारिता का प्रतिनिधि संकलन" का भी अध्ययन किया।

डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ की "हिन्दी पत्रकारिता और सृजनात्मकलेखन" भी शोध के लिए प्रेरणादायी पुस्तक रही।

विजयदत्त श्रीधर की पुस्तक "मध्य प्रदेश में प्रत्रकारिता का उद्भव एवं विकास" भी हिन्दी पत्रकारिता के विकास क्रमको समझने में सहायक रही।

एन. सी. पंत की "हिन्दी पत्रकारिता" विषय वस्तु के सामरिक परिदृश्य को समझने में सहायक रही है।

परियोजना स्वरूप और व्याप्ति

इस शोध परियोजना को सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए मुख्य विषय लिया है। जनसंचार माध्यम में हिंदी देता के लिए रोजगार के अवसर। इसमें जनसंचार के मुख्य दोनों प्रकार १) मुद्रित और २) इलेक्ट्रॉनिक को अध्ययनार्थ लिया है। इसमें केवल जनसंचार माध्यमों में हिंदी भाषा के अध्येता को जो सेवा के अवसर उपलब्ध है उन्हीं का मूल्यांकन किया जाएगा। इसकी सीमा और व्यक्ति को देखते हुए इसे नाम अंकित 7 अध्यायों में विभाजित कर विवेचन विश्लेषण किया जाएगा।

प्रथम अध्याय: अनुसंधान पद्धति और साहित्य का समीक्षात्मक मूल्यांकन

द्वितीय अध्याय : संचार माध्यम स्वरूप विवेचन

तृतीय अध्याय :जनसंचार माध्यम और हिंदी भाषा पारस्परिक संबंध

चतुर्थ अध्याय :मुद्रित संचार माध्यमों में हिंदी अध्येता को रोजगार के अवसर

पंचम अध्याय :इलेक्ट्रॉनिक माध्यम दूरदर्शन और विविध चैनलों में हिंदी अध्येता को रोजगार के अवसर

छठा अध्याय :इलेक्ट्रॉनिक माध्यम रेडियो और एफएम रेडियो में हिंदी और अध्येता को रोजगार के अवसर

उपसंहार

मनुष्य की विशिष्ट जैवकीय रचना, विचार - प्रक्रिया तथा सांस्कृतिक गुणों के सम्मिश्रण ने उसकी संचार- शक्ति को अभूतपूर्व विकास का वर्तमान प्रारूप प्रदान किया है। वस्तुतः वर्तमान विश्व का समस्त प्रषासन, जनसम्पर्क, सूचना प्रसारण और विपणन मुख्यतः जनसंचार पर ही निर्भर है। अतएव इस दशक मैं द्रुत संचार के अनेक उपकरण विकसित हो गए हैं। अब तक जिसे पत्रकारिता कहते थे, वह भी अब 'जनसंचार' रूप मैं परिणत हो गयी है।

मनुष्य की विशिष्ट जैवकीय रचना, विचार - प्रक्रिया तथा सांस्कृतिक गुणों के सम्मिश्रण ने उसकी संचार- शक्ति को अभूतपूर्व विकास का वर्तमान प्रारूप प्रदान किया है। वस्तुतः वर्तमान विश्व का समस्त प्रषासन, जनसम्पर्क, सूचना प्रसारण और विपणन मुख्यतः जनसंचार पर ही निर्भर है। अतएव इस दशक मैं द्रुत संचार के अनेक उपकरण विकसित हो गए हैं। अब तक जिसे पत्रकारिता कहते थे, वह भी अब 'जनसंचार' रूप मैं परिणत हो गयी है।

निष्कर्ष

- संचार व यातायात के साधनों ने आज सम्पूर्ण विश्व को बहुत निकट ला दिया हैं।
- यातायात के साधनों से जहाँ शीघ्र आवागमन सम्भव हुआ तो संचार के साधनों ने विश्व को आपस में शीघ्र ही सम्पर्क योग्य बना दिया. आज अंतरिक्ष में भी व्यक्ति धरती पर बैठे व्यक्ति से बात कर सकता हैं।
- यातायात व संचार के साधन वैश्विकरण का आधार हैं।

- शिक्षा के क्षेत्र में संचार के माध्यम से आज नवीन से नवीन ज्ञान एवं जानकारियों का ज्ञान तुरंत सभी स्थानों पर प्राप्त हो जाता हैं. शिक्षण सूत्र में विभिन्न दृश्य एवं दृश्य श्रव्य माध्यम अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।
- तकनीकी क्षेत्र में दूरदर्शन एवं इन्टरनेट की सहायता से प्रायोगिक ज्ञान को आसानी से ग्रहण किया जा सकता हैं. सभी यंत्रों एवं उपकरणों के प्रयोग को प्रत्यक्ष रूप से प्रयोगशालाओं के अतिरिक्त दूरदर्शन व इंटरनेट पर देखा जा सकता हैं. एवं उनका व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता हैं।
- परिवहन एवं संचार साधनों के विकास ने मानव जीवन को सरल एवं सुविधाजनक तो बना दिया है लेकिन इसके कारण वातावरण में प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है, जो मानव जीवन के लिए हानिकारक हैं।
- वर्तमान में कंप्यूटर एवं गणक मशीनों के प्रयोग ने हमें उन पर आश्रित बना दिया हैं. इससे हमारी मानसिक दक्षता का हास हुआ हैं. जो गणनाएं पहले बच्चें स्वयं आराम से कर लेते थे वे अब बिना केलकुलेटर की सहायता के करना असम्भव सा हो गया हैं।
- रोग निदान की अत्याधुनिक तकनीकों के प्रयोग ने चिकित्सा विज्ञान को काफी उन्नत बना दिया हैं. अब घातक रोगों के ईलाज में सुविधा हो गई हैं। परन्तु इन तकनीकों यथा MRI एक्सरे कीमोथेरेपी रेडियो थैरेपी आदि के प्रयोग से मानव शरीर में अन्य घातक प्रभाव परिलक्षित होने लगते हैं जो अन्य रोगों को जन्म देते हैं।
- संचार के नवीनतम साधनों यथा इंटरनेट आदि से हमें हर प्रकार की जानकारी घर बैठे कंप्यूटर पर बहुत ही कम खर्च में उपलब्ध हो जाती हैं।
- जनसंचार में फिल्म और टीवी, प्रकाशन, जन-संपर्क, पत्रकारिता, सम्पादन, फिल्म-मेकिंग, स्क्रिप्ट-राइटिंग व प्रोडक्शन इत्यादि के क्षेत्र में संभावनाओं के द्वार खोल देता है I संक्षिप्त में कहें तो जन-संचार एक व्यक्ति के लिए करियर में अपार विकल्प उपलब्ध करा देता है जिसके बाद वह अपनी रूचि के अनुसार कार्यक्षेत्र का चुनाव कर सकता है I

- जनमाध्यम का उपयोग सामयिक तथा महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रचारित व प्रसारित करने के लिए किया जाता है जिसका हमारे दैनिक जीवन के लिए महत्व हो ।
- भारत सरकार का करीब हर संस्थान अपने यहां से हिंदी में पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित करता है। इन पत्रिकाओं में प्रकाशन से लेकर संपादन तक में हिंदी के छात्रों की जरूरत पड़ती है। प्रिंट मीडिया के अलावा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी हिंदी जानने वालों को प्राथमिकता दी जाती है। इसके अलावा रेडियो में भी रोजगार के अनेक अवसर हैं।
- इलेक्ट्रानिक मीडिया का क्षेत्र अविश्वसनीय तरीके के से उद्यमिता व रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है।
- राष्ट्रीय और क्षेत्रीय चैनलों की संख्या दिनोंदिन बान दिखाते हुए इस क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं।
- जिससे करियर में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। अतः मीडिया उद्योग रोजगार प्रदान करने में एक अहम भूमिका निभा रहा है।
- रेडियो इंडस्ट्री की यह सबसे ज्यादा चर्चित और ग्लैमरस जॉब है।
- रेडियो इंडस्ट्री में आप बतौर ट्रांसलेटर भी करियर बना सकते हैं।
- आकाशवाणी और एफएम चैनल्स में ऐसे प्रोफेशनल्स के लिए जॉब के अच्छे अवसर हैं।
- आप अखबार, टीवी के अलावा रेडियो में भी जर्नलिज्म कर सकते हैं।
- रेडियो स्टेशन में किसी भी प्रोग्राम को 'ऑन एयर" करने के लिए साउंड इंजीनियर की सेवाएं ली जाती हैं।
- रेडियो स्टेशन के प्रोडक्शन डिपार्टमेंट में प्रोड्यूसर अहम पद है।